ओशो ध्यान और मानसून मस्ती महोत्सव 2013

ओशो का अद्भुत करिश्मा

मान्सून और म्युज़िक फेस्टिवल 11-15 अगस्त

अंतरराष्ट्रीय सहभागियों के अलावा भारत के 152 शहरों से तथा 17 प्रांतों से आये हुए ओशो प्रेमी मानो झमाझम बरसते हुए बादलों से होड़ करते हुए पुणे के ओशो इंटरनैशनल मेडिटेशन रिज़ार्ट में खूब बरसे।

और उनके लिए कार्यक्रमों का एक समृद्ध उपहार हाज़िर था। हर दिन शुरू होता सूर्योदय के साथ-- विशाल ओशो ऑडिटोरियम में विख्यात ओशो डायनैमिक मेडिटेशन में साधकों की भीड़ उमड़ पड़ती। और ऐसा लगता कि यह दिन कभी समाप्त ही नहीं होगा। लोगों में ऐसा जोश और उल्लास था कि बड़े बेमन से लोग आधी रात विदा होते। मेडिटेशन रिज़ार्ट की हरियाली में पाच दिनों के दौरान पूरे 71 कार्यक्रम आयोजित किए गए । दिन भर ओशो ऑडिटोरियम में होनेवाली ध्यान विधियां, सुबह बुद्ध ग्रोव में ताई ची और योग के क्लास, उसके साथ चुआंग त्ज़ु में होनेवाले ध्यान लोगों को शांति से सराबोर करते। सुबह मौन ध्यान के समय तीन दिन संगीत ध्यान भी हुए। एक दिन हिंदराज दिवेकर ने वीणा बजाई, उसके बाद उस्मान खान ने सितार पेश किया और आखिरी दिन राजेन्द्र तेरेदेसाई ने बांसुरी बजाई। संगीत की सुरावलि के बीच मौन का सरोवर ध्यानियों को और गहरे डुबोता। उसी समय बाशो स्पा के स्विमिंग पुल और जकुज़ी के पानी में डूबे हुए लोगों की किलकारियां वातास में आनंद की लहरें पैदा करतीं।

दोपहर भोजन के बाद आनेवाली सुस्ती को भगाने के लिए लाइव म्युज़िक आयोजित किया गया था जिसमें बिक्रम सिंग और उदय देशपांडे के साथियों ने लोगों को खूब नचाया। बिहार से आया हुआ बाल कलाकार त्योहार के गीत भी दिलकश थे।

ओशो का संदेश है, मृत्यु के बिना जीवन अधूरा है। मानो इसे सार्थक करते हुए हमारी पुरानी जिंदादिल मा जीवन , जो ओशो टाइम्स के संपादन विभाग में काम किया करती थी, ने शरीर छोड़ने का फैसला लिया। तो सभी आगंतुकों ने धूमधाम से नाचते गाते जीवन को बिदाई दी। रिज़ार्ट से लेकर स्मशान तक मैरून परिधान की लंबी कतार नागरिकों को भी एक संदेश दे गई: हर घटना का उत्सव मनाओ।

संध्या ध्यान सभा के बाद रात सजी अतिथि संगीतकारों की शानदार महफिलों से । एक दिन बिक्रम सिंग और उसके युवा वादकों ने शक्तिशाली आर्केस्ट्रा पेश करते हुए पूरे ऑडिटोरियम को नचाया। दूसरे दिन बॉलीवुड की लोकप्रिय गायिका रेखा भारद्वाज ने इस कदर रूहानी सूफी नगमे गाए कि लोग अनजान लोक में खो गए। अजीब आलम था। वे खुद भी डूबी हुई थीं और उन्होंने देशी विदेशी सभी श्रोताओं को डुबो दिया। न समय की सीमा, न भाषा का बंधन, था सिर्फ एक रूहानियत का जज्बा।

इसके अलावा संन्यास उत्सव, बॉलीवुड डान्स पार्टी, ध्यानियों की कला का प्रदर्शन करता हुआ वैरायटी शो, सभी एक से बढ़कर एक हिट हुए।

जहां भी जाएं, एक ही नज़ारा था: हाउसफुल! ध्यान हो या ओशो मिस्टिक रोज़ का डेमो, दोपहर भोजन के उपरान्त का संगीत हो या रात की महफिलें, सभी खचाखच भरी हुईं। संध्या ध्यान सभा में तो इस दीवार से उस दीवार तक लोग सटकर बैठते थे। "ओशो" की गगन भेदी पुकार की वर्षा में तो ध्यानियों के प्राण नहा उठते।

अब हर कहानी का अंत तो होता ही है। सो आखिरी दिन लोग जब जाने को हुए तो उनके चेहरे पर थी मुस्कान और पैरों में नृत्य। हर कोई यही कह रहा था: वाह! क्या करिश्मा है ओशो का।"

You Tube	Day 1: http://youtu.be/pdN9mPRkTq0
You Tube	Day 2: http://youtu.be/XaKTvjkdkPE
You Tube	Day 3: http://youtu.be/4N8RhOARiSM
You Tube	Day 4: http://youtu.be/Ph4hPFbTXL0
You Tube	Day 5: http://youtu.be/2xDDAJU_fdQ

OSHO®
© 2013 ओशो इंटरनेशनल
कॉपीराइट & ट्रेडमार्क जानकारी